

चलाया गया मत विशेष जैसे- ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म 3. काव्य. काव्य में अलंकार के संदर्भ में धर्म उस गुण या वृत्ति को कहते हैं जो उपमेय और उपमान दोनों में समान रूप से विद्यमान हो और जिसके कारण एक वस्तु की उपमा दूसरी से दी जाती है जैसे- रक्त चरण कमल सम कोमल कमल और कोमल तथा लाल चरण, यहाँ कोमलता तथा ललाई उपमेय और उपमान में विद्यमान समान शब्द धर्म है 4. लौकिक, सामाजिक कर्तव्य उदा. गुरु भक्ति विद्यार्थियों का धर्म है, माता-पिता की सेवा पुत्र का धर्म है 5. सामाजिक क्षेत्र में व्यवहार, विधि आदि के आधार पर तय, नियत या निश्चित, वे सभी काम या बातें जिनका पालन समाज के अस्तित्व अथवा संचालन के लिए आवश्यक होता है तथा जो सार्वजनिक रूप से मान्य होता है उदा. सत्य, न्याय, अहिंसा, दया, सदाचार आदि का पालन मानव धर्म है 6. ऋषि, मुनि अथवा आचार्य द्वारा निर्दिष्ट वह कृत्य जिससे पारलौकिक सुख मिले 7. मीमांसा के अनुसार वेद विहित यज्ञादि कर्मों का विधिपूर्वक अनुष्ठान ही धर्म है तथा इससे स्वर्ग की प्राप्ति होती है 8. वह कर्म जिसे वर्णाश्रम आदि की दृष्टि से करना आवश्यक हो (इसके पाँच भेद होते हैं (क) वर्ण धर्म (ख) आश्रम धर्म (ग) वर्णाश्रम धर्म (घ) गौण धर्म तथा (ज) नैमित्तिक धर्म 9. मनु ने धर्म के दस गुणों की चर्चा की है- धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इंद्रिय-निग्रह, धी, विद्या, सत्य एवं अक्रोध 10. राजा अथवा सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट लोक-व्यवहार संबंधी नियम 11. सदाचार 12. पुण्य 13. सत्कर्म 14. सत्संग 15. न्यायशीलता और विवेक बुद्धि 16. यम 17. निष्पक्षता 18. औचित्य 19. तरीका, ढंग 20. आचार 21. युधिष्ठिर 22. याग 23. अहिंसा 24. उपनिषद् 25. न्याय 26. धनुष 27. सोमपायी 28. आत्मा 29. कुंडली में लग्न से नवाँ स्थान मुहा. धर्म में आना- अंतःकरण में उचित जान पड़ना प्रयो. जैसा तुम्हारे धर्म में आए करो; धर्म कमाना- धर्म करके उसका फल संचित करना प्रयो. गो-सेवा कर धर्म कमाओ; धर्म की धूम- धर्म का अत्यधिक प्रचार प्रयो. अखण्ड यज्ञ के दौरान चारों

ओर यज्ञ की धूम मची हुई थी; धर्म खाना- धर्म की शपथ खाना प्रयो. धर्म की खाकर कहो कि तुमने रुपये नहीं चुराये हैं; धर्म की दुहाई देना- धर्म का हवाला देना, धर्म का स्मरण करना उदा. धर्म की दुहाई की आड़ में कृपया आप गलत काम न करें; धर्म बिगाड़ना, धर्म भ्रष्ट करना- कर्तव्य च्युत धर्म के विरुद्ध आचरण करना उदा. मुझ से जीव हत्या करवा कर तुमने मेरा धर्म बिगाड़ (धर्म भ्रष्ट कर) दिया; धर्म से कहना- धर्म को ध्यान में रखकर उचित और न्यायसंगत बात कहना; धर्म लगती कहना- धर्म का ध्यान रखकर ठीक-ठाक, उचित बात कहना प्रयो. मैं तो धर्म की लगती कहता हूँ, चाहे किसी को अच्छा लगे या बुरा; धर्म रखना- धर्मानुसार आचरण या व्यवहार करना उदा. विलायत में उसने अपना धर्म रखते हुए दिन व्यतीत किए।

धर्म-कथक पुं. (तत्.) धर्म, विधि, नियम या कानून का व्याख्याता।

धर्म-कर्म पुं. (तत्.) धर्म या विधान सम्मत काम उदा. धर्म-कर्म के मामले में वे जीवन में कभी पीछे नहीं हटे।

धर्मकाम वि. (तत्.) धर्म को ध्यान में रखकर उचित कार्य करने वाला प्रयो. धर्मकाम युधिष्ठिर को कौन नहीं जानता।

धर्मकाय पुं. (तत्.) 1. बौद्ध-दर्शन में बुद्ध का वह परमार्थ-भूत शरीर जो अनिर्वचनीय, अनंत, अपरिमेय तथा सर्वव्यापक माना गया है 2. एक जैन मुनि।

धर्मकार्य पुं. (तत्.) धर्म का काम, धार्मिक कृत्य।

धर्मकील पुं. (तत्.) 1. राज्य का शासन 2. शासन करने वाली सत्ता 3. पति।

धर्मकृच्छ्र पुं. (तत्.) धर्म की दृष्टि से किसी कार्य में उचित तथा अनुचित दोनों जान पड़ने से उत्पन्न द्वैत भाव, वह स्थिति जिसमें धर्मपालन करना आसान न हो।

धर्मकृत्य पुं. (तत्.) धार्मिक कांड या कर्मकांड प्रयो. वह उम्र भर धर्मकृत्य निभाता रहा।

धर्मकेतु पुं. (तत्.) 1. कश्यप वंशीय सुकेतु राजा के पुत्र का नाम 2. बुद्धदेव।